International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जवाहर लाल नेहरु : समाजवाद और राष्ट्रवाद (संयुक्त प्रान्त के सन्दर्भ में)

डॉ. अपर्णा

सहायक आचार्य इतिहास विभाग डा० श०मि०रा०पु० विश्वविद्यालय, लखनऊ।

सारांश:
''एक समाज तभी समाज कहलाता है जब उसमें रहने वाले प्रत्येक पुरूष और स्त्री न्यायिक समानता के साथ समान रूप से अवसरो का उपभोग कर रहे है।''[1] इस तरह की समाजवादी विचारधारा से ओत–प्रोत जवाहर लाल नेहरू का व्यक्तित्व था। उनका ये समाजवादी व्यक्तित्व 1920–21 के समय असहयोग आन्दोलन के दौरान ही दिखाई पड़ना आरंभ हो जाता है और इसकी चरम परिणति 1930–40 के दशक में कृषक–समस्याओं के सन्दर्भ में विशेष रूप से दिखती है। 1920 से ही जवाहर लाल नेहरू कृषकों की समस्याओं से न केवल स्वयं आबद्ध होने लगे बल्कि पूरे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्यान भी इस और आकृष्ट करने में सफल रहे है। लेकिन 1940 के आते–आते अपने कुछ कृत्यों से वे अपने ही समाजवादी छवि से विमुख होते प्रतीत हुये। उनका ये व्यक्तित्व परस्पर विरोधी क्यो रहा, अपने इस शोध–पत्र में मैने इसी का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। संयुक्त प्रान्त के सन्दर्भ में इसका परीक्षण करना और भी रूचिकर है क्योंकि यहाँ से जवाहर लाल नेहरू असीम रूप से जुड़े हुये थे।

सारगर्भित शब्द: कृषक, भूमि व्यवस्था, लगान, सूखा तथा नमक कानून।

भूमिका:
सामान्यतया ऐसा माना जाता है कि कृषकों की समस्याओं से सामंजस्य स्थापित करने का कार्य महात्मा गांधी ने किया। लेकिन यदि हम स्त्रोतों का गहन अध्ययन करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहर लाल नेहरू वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होनें कृषकों की मूलभूत समस्याओं से तारतम्य स्थापित करना प्रारम्भ किया।

1929 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस की अध्यक्षता करते समय उनकी स्पष्ट समाजवादी छवि अवलोकित हुयी जब उन्होने तत्कालीन प्रचलित भूमि व्यवस्था पर प्रहार करते हुये कहा,''ये केवल कृषक वर्ग है जो तीव्रता से अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा है और हमारे कार्यक्रम को निश्चित ही उनकी वर्तमान परिस्थितियों को देखना चाहिए। उनका वास्तविक उद्वार केवल भूमि–कानून और वर्तमान भूमि–व्यवस्था में आधारभूत परिवर्तन के साथ हो सकता है।''[2]

इसी समय संयुक्त प्रान्त में पहले से ही 1928 में सूखे (Drought)[3] और 1929 में विश्वव्यापी आर्थिक मंदी (Economic Depression)[4] ने कृषकों के कष्टों को चरम पर पहुँचा दिया था। 1931 की सेन्सस (Cnesus) के अनुसार नवम्बर 1929 से जनवरी 1931 के बीच केवल 14 महीनों में ही खाद्यानों के मूल्यों में 70 प्रतिशत ह्रास हो गया था।[5] इस समय जबकि 1931 तक खाद्यानों के मूल्यों में 1901 के स्तर तक गिरावट आ गयी थी तब भी कृषकों से ली जाने वाली काश्तकारी की दर की मात्रा 1901–1931 के बीच 60 प्रतिशत बढ़ चुकी थी।[6]

कृषकों की ऐसी शोचनीय दशा को देखते हुये ही जनवरी 1930 में जब ''सविनय अवज्ञा आन्दोलन'' प्रारंभ हुआ तो जवाहर लाल नेहरू ने 'नमक–कानून' तोड़ने[7] के स्थान पर 'जमीदार विरोधी लगान न अदायगी' को आन्दोलन का मुख्य मुद्दा बनाने का पक्ष रखा।[8] इस संबंध में उन्होंने 05 फरवरी 1930 को रायबरेली की कृषक रैली को संबोधित करते हुये कहा,''लगान की बढ़ी हुयी दर आपके सामने एक बहुत बडी समस्या है और इस मामले में आपके पास सदैव से अधिकार है कि आप लगान की पूरी राशी अदा करने से इन्कार कर दें, कम से कम इसमें जमीदारों का एक हिस्सा तो बिल्कुल व्यर्थ हैं''।[9] एक समाजवादी होते हुये जवाहर लाल नेहरू इस बात से पूरी तरह भिज्ञ थे कि कृषकों की समस्याओं का कारण केवल औपनिवेशिक व्यवस्था ही नही वरन् भारत का सामंतीय ढांचा भी है। उन्होने इसी रैली में आगे कृषकों से स्पष्ट उदघोष किया, ''आपकी समस्या क्या है? आपकी समस्या है भू–स्वामी आपसे बहुत अधिक कर लेते है और उनके आदमी, पुलिस व अन्य लोग मिलकर आपको परेशान करते हैं। धन हमसे लिया जाता है और हमसे लेकर इसी से सेना, पुलिसदल को व्यवस्थित कर हमारा ही दमन किया जाता है। लेकिन अगर आपको अपनी स्थिति सुधारनी है तो आप अपनी शक्ति में वृद्धि कीजिए और उनसे संघर्ष कीजिए ताकि उनको ये अंदाजा लग जाय कि अब आप उनके अत्याचारों को और सहन नही करेंगे।" [10]

उन्ही के प्रयास से अक्टूबर–1930 में प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी (PCC) ने 'कर न अदायगी' के अभियान को प्रारंभ करने का निर्णय किया लेकिन वर्ग–संघर्ष (Class Struggle) बचाने के उददेश्य से कांग्रेस ने भू–स्वामियों व काश्तकारों दोनों से आहवाहन किया कि वे कर ने दें।[11]

05 मार्च को 'गांधी–इरविन' समझौता हो गया और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ 'कर न अदायगी' का अभियान भी स्थगित कर दिया गया। तब भी जवाहरलाल नेहरु समाजवादी दृष्टिकोण से ओत–प्रोत रहे और सरकार से लगातार कृषकों को कर में छूट देने के लिए प्रार्थनापत्र भेजते रहे। इस संबंध में उन्होने 11 मार्च को संयुक्त प्रान्त की सरकार के मुख्य सचिव को लिखे पत्र में कहा, "कांग्रेस सदस्य के रुप में नही वरन कृषकों का शुभचिन्तक होते हुये मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि जबकि खाद्यान्नो की स्थिति अच्छी नही है तो क्षेत्रिय अधिकारियों को जमींदारो पर रोक लगानी चाहिए ताकि वे बलपूर्वक कृषकों से कर लेना बन्द कर दे साथ ही बेदखल करना भी और जिन्हे बेदखल किया है उन्हे उनकी भूमि वापस करे दें।"[13]

कृषकों के प्रति उनका ये समाजवादी चरित्र यथावत बना रहा। कृषकों की समस्याओ को देखते हुये उन्होने न केवल सरकार से प्रार्थना की बल्कि वे भू–स्वामियों से भी निरन्तर प्रार्थी रहे उदाहरण के लिए इस सम्बन्ध में जवाहर लाल नेहरु ने 05 दिसम्बर 1931 को रायबरेली के कुररी सिदौली के राजा रामपाल को स्वयं लिखा, "मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूँ कि जमींदारी प्रथा एक ऐसी प्रथा है जो हमारे समाज के लिए हानिकारक है। साथ ही मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि ये प्रथा है आधुनिक परिस्थितियों के बिल्कुल विपरीत है तथा अपनी स्वाभाविक अस्थिरता के ही कारण निश्चित ही सामप्ति को बाध्य हो जायेगी।"[14]

1933 में उनके समाजवादी विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति उनके पत्र "भारत किधर" (Whether India) में अवलोकित होने लगी, जिसमें उन्होने लिखा, "हम किसकी स्वतंत्रता के लिए प्रयास कर रहे है? क्या ये केवल राजाओं या सामन्तवादी तत्वों के लिए है जो आम नागरिकों का शोषण करते रहे है। भारत का सर्वप्रथम लक्ष्य यहां के लोगों का शोषण समाप्त करना होना चाहिए। राजनैतिक रुप से इसका तात्पर्य स्वतन्त्रता से होना चाहिए जिसका अर्थ अंग्रेजी संप्रभुता का अंत और आर्थिक व सामाजिक रुप से इसका तात्पर्य सभी विशिष्ट वर्ग के विशेषधिकारों का अंत होना चाहिए।"[15]

07 अप्रैल 1934 को जब पुनः कर न अदायगी का अभियान स्थगित कर दिया[16] गया तो वे बहुत ही दुखी हुये जिसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति 14 अगस्त 1934 को गांधी जी को लिखे उनके एक पत्र में दृष्टिगोचर होती है। "सविनय

अवज्ञा आन्दोलन को वापस लेने की नीति ने मुझे बहुत आघात पहुँचाया है और ये मेरे लिए एक आत्मिक हार है कोई आम बात नही।"[17]

जवाहर लाल नेहरु के समाजवादी व्यक्तित्व को पूरी तरह से फलने का अवसर तब मिला जब उन्हे पुनः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता लखनऊ कांगेस में सौंपी गयी।[18]

लखनऊ कांग्रेस में इन्होने पुनः अपना मत प्रकट करते हुये कहा, "मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूँ कि आज दुनिया और भारत की सभी समस्याओं का अंत केवल समाजवाद है। जब मैं इस शब्द का प्रयोग करता हूँ तो मेरा तात्पर्य केवल अस्पष्ट लोकहितैषी भावना से नही होता है बल्कि एक वैज्ञानिक व आर्थिक रुप में होता है। यद्यपि समाजवाद मेरे लिए आर्थिक सिद्धान्त से कही अधिक महत्व रखता है। ये जीवन का एक ऐसा दर्शन है जो मुझे प्रभावित करता है। मैं गरीबी, बेरोजगारी, को समाप्त करने का कोई दूसरा मार्ग नही पाता हूँ। इसके लिए बड़े और क्रान्तिकारी सामाजिक व राजनैतिक ढँाचें में परिवर्तन की आवश्यकता है जो समाजवादी अभिरुचि को समाप्त करें .... मैं चाहता हूँ कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी एक समाजवादी संगठन बनें।[19]

1936–37 में इन्होने कांग्रेस की अध्यक्षता करते हुये कांग्रेस को अपने समाजवादी रंग में रंगने का भरपूर प्रयास किया, जिसकी अभिव्यक्ति कांग्रेस के 1937 के 'चुनावी घोषणापत्र'[20] में व्यक्त होती है। इसमें कृषकों की समस्याओं के सभी पहलुओं को उठाया गया जिसमें भूमि–प्रणाली, राजस्व और काश्तकारी में सुधार के लिए प्रतिबद्धता प्रकट की गयी।[21]

1937 में ही जवाहरलाल नहेरु ने सभी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों को आदेश दिया कि, "कांग्रेस के कृषक सम्बन्धी कार्यक्रमों को कृषकों के समक्ष पहुँचाया जाये साथ ही उनकी सभी समस्याओं पर विचार किया जाये व उन्हे सुलझाने का भी प्रयास किया जाये। इसके अलावा उन्हे एक संगठित रुप में अभिव्यक्ति देने के लिए शिक्षण दिया जाये।"[22]

लेकिन 1937–39 के बीच जब प्रान्तो में प्रथम बार कांग्रेस–मंत्रिमण्डल का गठन हुआ तो जवाहरलाल नेहरु अपने कुछ कृत्यों से अपने ही समाजवादी दृष्टिकोण से विमुख होते प्रतीत हुये। **एक** तो कांग्रेस जब अपनी मंत्रिमण्डल की अवधि के दौरान अपनी कृषक संबंधी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करने में असमर्थ रही तो उनके विरुद्ध कृषको के प्रदर्शन पर इन्ही जवाहर लाल नेहरु ने आपत्ति प्रकट की। 14 अप्रैल को प्रेस विज्ञप्ति मे इसकी तीव्र भर्त्सना करते हुये जवाहरलाल नेहरु ने कहा कि "मेरे विचार से कौंसिल के चैंम्बर के सामने इस प्रकार का बार–बार प्रदर्शन करना ही अनुपयुक्त है, क्योंकि इस प्रकार के प्रदर्शन से ही इनका उद्देश्य विफल हो जाता है और इन्हे बार–बार दोहराने से वे सस्ते व हास्यास्पद लगते है।"[23]

दूसरा 1939 में जब वे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने तो उन्होने कृषकों से स्पष्ट शब्दों में उदघोष किया, "कांग्रेस की पंचायत, कांग्रेस की कार्यकारिणी देश और देशवासियों से संबंधित सभी समस्याओं के लगभग प्रत्येक पहलू पर विचार करती है जिसमें कृषक भी सम्मिलित है और जो कुछ भी निर्णय कांग्रेस की पंचायत के सबसे ऊपर भाग में लिया जाता है उसका अनुगमन (Follow) करना चाहिए, प्रांतीय स्तर की कमेटियों से लेकर मण्डल और ग्रामीण स्तरों की कमेटियों द्वारा, बिना अनुशासनहीन हुये और बिना अनियमित हुये। इसके बिना कांग्रेस का ये विशाल संगठन प्रभावी रुप से कार्य नही कर पायेगा।"[24]

जवाहरलाल नेहरु समाजवादी होते हुये और कृषकों के प्रति बार–बार अपनी प्रतिबद्धता प्रकट करते हुये भी अपने ही विचारों से विमुख क्यों हुये? वस्तुतः इसका मूल्यांकन करने के लिये उनके समाजवाद से संबंधित कुछ

वक्तव्यो पर प्रकाश डालना आवश्यक है। 'समाजवाद' के विषय मे 08 अक्टूबर 1936 को उन्होंने मद्रास के गोखले सभागार[25] में लोगो को सम्बोधित करते हुये कहा, 'समाजवाद हमारी आंखो से आवरण उठाता है और हमें बताता है कि आज हमारे चारों ओर विश्व के समाज में जो कुछ भी हो रहा है वो पूरी तरह से शोषण पर आधारित है। ये संघर्ष चल रहा है लेकिन यदि आप इसका समाधान निकालना चाहते है तो पहले आपको समझना होगा कि 'संघर्ष' क्या है?[26]

ये 'वर्ग संघर्ष' हमारे जीवन के कई भाग में है। आप देखेंगे कि सभी स्थानो पर कार्यवाहकों व कार्यकर्ताओं के बीच में एक संघर्ष चल रहा है। यही वर्ग संघर्ष है लेकिन 'भारत' जैसे देश में हमारे पास केवल वर्ग संघर्ष नही है बल्कि राष्ट्रीय संघर्ष भी है जो वर्ग संघर्ष का निर्माण नही करता है बल्कि हमारा ध्यान वर्तमान तथ्य की ओर ले जाता है कि इससे कैसे छुटकारा पाया जाये और इसका उद्देश्य ही वर्गविहीन समाज है।[27]

एक तरफ हमें मुख्य रुप से इस राष्ट्रीय मूलभूत प्रश्न को देखना है तो दूसरी तरफ आर्थिक प्रश्न को। देश की आर्थिक स्थिति हमें आन्तरिक रुप में समाजवादी दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन इसी समय पर राष्ट्रीय प्रश्न हमारे लिये सबसे प्रमुख प्रश्न है। समस्या ये है कि राष्ट्रवाद व समाजवाद को एक साथ जोड़ा कैसे जाये..........यद्यपि हम सभी प्रश्नों पर सहयोग नही कर सकते लेकिन हम एक समान प्रश्न अर्थात 'साम्राज्यवाद–विरोधी' प्रश्न पर एक हो सकते है।[28] क्योकि हमारे लिये राष्ट्रवाद का मुख्य उद्देश्य भारत को स्वतंत्रता की ओर ले जाना है और हमारे सारे शारीरिक, मानसिक नैतिक व आत्मिक विकास के लिये मार्ग बनाना है"।[29] 16 अक्टूबर 1936 को उन्होंने 'त्रिचनापल्ली' के मजदूरों की एक सभा को संबोधित करते हुये इसी सम्बन्ध में कहा, 'हम समाजवाद को आज नही ला सकते क्योंकि भारत जैसे देश में समाजवाद अभी नही आ सकता'।[30]

निष्कर्षः इस प्रकार यद्यपि जवाह लाल नेहरु समाजवादी विचारधारा से ओत–प्रोत थे। लेकिन फिर भी इस तथ्य से भिज्ञ थे कि तत्कालीन भारत की सबसे बड़ी समस्या स्वतंत्रता है। यही कारण है कि जब भी उन्होने समाजवादी प्रश्न उठाया तब भी वे राष्ट्रवादी उद्देश्यों को नही भूले। 1930 मे जब उन्होंने भू–स्वामियों के विरुद्ध कृषकों को 'कर न अदायगी' के अभियान के आह्वाहन किया तो भी कृषकों को अन्त में यही संदेश दिया कि 'इस संबंध मे हम गांधी जी के आदेश का इन्तजार करेंगे'।[31] 'क्योंकि वे जानते थे कि उनका आन्दोलन साम्राज्यवादी आन्दोलन का एक भाग है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता में निहित है।'

इस प्रकार 1937 में अपने चुनाव में ही वे इस तथ्य से भिज्ञ थे कि कृषकों की समस्याओं का निस्तारण औपनिवेशिक भारत में नही हो सकता। इस कारण वे सरकार बनाने के पक्ष मे बिल्कुल नही थे।[32]

यही कारण है कि क्योंकि राष्ट्रवाद के लिए तत्कालीन परिस्थितियों में मुख्य तत्व था इसलिये वे समाजवादी होते हुए भी अपने ही पथ से विमुख हुये।

सन्दर्भ सूचीः–

1. **सेलेक्टेड वर्क्स आफ जवाहर लाल नेहरु** वा 14, एस.गोपाल, 1975–78 पृष्ठ 355
2. "इण्डिया डिमांड्स इंडियेंडेंस" **द इन्साक्लोपीडिया आफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस,** वा 9, 1925–29, चीफ एडीटर ए0एम0 जैदी, डा0 एस0जी0 जैदी, एडीटर्स अब्दुल मोइद जैदी, नौशाब फिरदौस अल्वी, अमीन अहमद, कंपाइल्ड अंडर द ऑसपीशियस ऑफ इंडियन इंस्ट्रीट्यूट आफ एप्लाइड पोलिटिकल रिसर्च, एस0 चांद एण्ड कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली 1980।

3. **सेन्सस ऑफ इण्डिया 1931,** यूनाइटेड प्रोविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, पार्ट वन, रिपोर्ट ए0सी0टर्नर, सुपरिटेंडेट सेंसेंस आपरेशंस, पुर्नमुद्रण ऊषा पब्लिकेशन, 1987, पृष्ठ 41।
4. **ए0ए0** वॉंग, **रेन्ट एण्ड रेवेन्यू पॉलिसी इन द यूनाइटेड प्रोविंसेज,** ए रिट्रास्पेक्ट एण्ड एन एक्सप्लेनेशन ऑफ द स्टेप्स टेकेन इन द प्रसेंज इमरजेंसी, लखनऊ 1932, पृष्ठ–171।
5. **सेंसेस ऑफ इण्डिया** 1931 पूर्वोत्तर पृष्ठ–39–40।
6. रिमार्क ऑफ सी राजगोपालचारी ऑन एग्रोरियन डिस्ट्रेस इन यू0पी0 एण्ड हिस एनालसिस आन द रिपोर्ट ऑफ द कमेटी ऑफ यू0पी0पी0सी0सी0 ऑन द एग्रोरियन सिचुवेशन, यंग इण्डिया, दिसम्बर 17, 1931 **पंडित जवाहर लाल नेहरु एण्ड द पेजेन्ट मूवमेन्ट,** रवीन्द्र कुमार, नई दिल्ली 1990, आई.सी.एच.आर. लाइब्रेरी, पृष्ठ–206।
7. सुमित सरकार, **आधुनिक भारत** 1985–1947, नई दिल्ली, पुर्नम्रदण 1995, पुष्ठ 325।
8. स्पीच ऑफ पंडित जवाहर लाल नेहरु एट टंगन, डिस्ट्रिक्ट रायबरेली ऑन द फिफ्थ फेबररी, 1930, एट 2.30 पी. एम. इन द प्रजेंस ऑफ अबाउट वन थाउजेण्ड पेसेंटस, डाकूमेन्ट नं0 90/30, **होम पॉलेटिकल** 1930, एन.आई. नई दिल्ली।
9. वही।
10. वही।
11. सुशील श्रीवास्तव '**कान्फिलिक्ट इन एन अग्रेरियन सोसाइटी**' 1920–39 नई दिल्ली, 1995 पृष्ठ 293।
12. एजीटेशन हेज स्टाप्ड फॉर द वेरी पर्पज ऑफ कांफेरिग अबाउट पूर्ण स्वराज, मार्च 8, 1931, सीतला सहाय, फा0 नं0 22/Xi/31 **होम पॉलिटिकल** 1931, एन.आई. नई दिल्ली।
13. ए लेटर ऑफ पं0 जवाहरलाल नेहरु टू द चीफ सेकरेटरी, यू0पी0 गर्वमेन्ट, लखनऊ, मार्च 11,1931 इलाहाबाद, **एग्रोरियन डिस्ट्रेस इन यूनाइटेड प्रोविसेंस,** पूर्वोक्त, पृष्ठ 236।
14. ए लेटर ऑफ पं0 जवाहरलाल नेहरु टू राजा सर रामपाल सिंह, कुर्री सिदौली राज, पी.ओ. सिदौली, डिस्ट्रिक्ट रायबरेली, अवध डेटेड 5.11.1931 स्वराज भवन, इलाहाबाद फाइल नं0 G-140(5/wi)/1931 **ए0आई0सी0सी0,** नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
15. वेदर इंडिया, नेहरु आन सोशलिजम, **सेलेक्टेड स्पीच एण्ड राटिंग्स** पर्सपेक्टिव पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, न्यू डेल्ही, 1964 पृष्ठ–245।
16. दूसरा 'कर न आदायगी' का अभियान 28 नवम्बर 1931 को प्रारंभ हुआ था। द पटना सेसंस, **द स्टडी ऑफ कांग्रेस पिलिग्रमिज,** आफिशियल रिपोर्ट्ज ऑफ जनरल सेकरेटरी वा 3–4, पृष्ठ 1916–1955, एडीटर ए.एम. जैदी, दिल्ली 1990, नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी पृष्ठ 183।
17. बी0बी0 मिश्रा, द **कांग्रेस पार्टी एण्ड गर्वमेन्ट पॉलिसी एण्ड परफारमेंस,** कांसेटट पब्लीसिंग कंपनी, नई दिल्ली 1988, पृष्ठ 131।
18. लखनऊ कांग्रेस, **सेलेक्टेड, वर्क्स आफ जवाहर लाल नेहरु** वा 9 एडीटर, एस. गोपाल, नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, नई दिल्ली पृष्ठ 180।
19. वही पृष्ठ–180,181
20. फुल टेंक्ट्स ऑफ इलेक्शन मेनिफेस्टो, एडीटर ए.एम. जैदी, **प्रोमिसेस टू कीप,** ए स्टडी ऑफ इलेक्शन मेनिफिस्टोज ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस 1937–1985, नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
21. वही।
22. सर्कुलर नं0 30, P1/2571, जुलाई 10, 1937, ईशूड बाई पं0 जवाहर लाल नेहरु टू प्रोविन्शियल कांग्रेस कमेटी, फाइल नं0 41/1936–37 **ए0आई0सी0सी0,** एन0एम0एम.एल0, न्यू डेल्ही।
23. प्रेस स्टेमेन्ट ईशूड बाइ पं0 जवाहर लाल नेहरु ऑफ द प्रपोज्ड किसान डिमांडट्रेशन बिफोर द लखनऊ कांउसिल चेम्बर, फाइल नं0 Pt11, 1938–39 **ए0आई0सी0सी0,** नेहरु मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, न्यू डेल्ही।

24. आन द सॅलिडेरिटी ऑफ द किसान, **सेलेक्टेड, वर्क्स आफ जवाहर लाल नेहरु** वा 9 एडीटर, एस0 गोपाल, नई दिल्ली पृष्ठ–455।
25. **'सोशलिज्म एण्ड द इण्डियन स्ट्रगल'** स्पीच एट द गोखले हॉल, मद्रास, 08 अक्टूबर 1936, **सेलेक्टेड, वर्क्स आफ जवाहर लाल नेहरु** वा 7, ए प्रोजेक्ट ऑफ द जवाहर लाल नेहरु मेमोरियल फण्ड, एडीटर, एस. गोपाल, ओरियन्ट लिमिटेड 1975 पृष्ठ–524।
26. वही।
27. वही।
28. वही पृष्ठ–525–526।
29. सोशिलिज्म एण्ड नेशिनलिज्म, **स्पीच एट द गोखले हॉल,** पूर्वोक्त पृष्ठ–520।
30. ट्रेड यूनियन एण्ड द कांग्रेस, **स्पीच एट द मीटिंग आफ रेलवे वर्कस,** त्रिचनापल्ली, 16 अक्टूबर 1936, सेलेक्टेड वर्क्स जवाहर लाल नेहरु पूर्वोक्त पृष्ठ 528।
31. **स्पीच आफ पंडित जवाहर लाल नेहरु एट टंगन,** डिस्ट्रिक्ट रायबरेली, ऑन द फिफ्थ फेबवरी 1930, पूर्वोक्त।
32. **सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहर लाल नेहरु** वा. 9, एडीटर एस. गोपाल पूर्वोक्त पृष्ठ–184।